उच्च सांवेगिक समायोजन एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाले किशोर विद्यार्थियो की अध्ययन आदतों का अध्ययन

प्रो. (डॉ.) सपना जोशी
शोध निर्देशक
शिक्षा संकाय
कोटा विश्वविद्यालय , कोटा (राज.)

राजेश कंवर खिंची
पी.एचडी. शोधार्थी
शिक्षा संकाय
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)

प्रस्तावना

सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल उठता है तथा सूर्य अस्त होने पर कुम्हला जाता है, ठीक उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर बालक कमल के फूल की भांति खिल उठता है। शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक की बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। जॉन डी.वी. के मतानुसार ''शिक्षा व्यक्ति की उन सभी योग्याताओं का विकास है जिनके द्वारा वह वातावरण पर नियंत्रण रखने तथा अपनी संभावनाओं को पूर्ण करने की क्षमता का विकास करते है।

किशोरावस्था वह समय है, जिसमें किशोर अपने को व्यस्क समझता है और व्यस्क उसे बालक समझते है। इस अवस्था में किशोर का शारीरिक विकास इतनी तीव्र गति से होता है कि उसमें क्रोध, घृणा, चिड़चिड़ापन, उदासीनता आदि लक्षण उत्पन्न हो जाते है। इस अवस्था में बालक दूसरों का नियंत्रण पसंद नहीं करता है, वह अपने निर्णय स्वयं लेना पसंद करता है, अतः किशोरावस्था में बालक के विकास के लिए सांवेगिक समायोजन अहम भूमिका निभाता है।

ऐसा माना जाता है कि जब व्यक्ति की संवेगात्मक बुद्धि उच्च स्तर की होती है तो उसका सांवगिक समायोजन उच्च स्तर का होता है क्योंकि वह संवेग को समझकर उनके साथ समायोजन कर लेता है। किशोरावस्था में कुछ विद्यार्थी शिक्षा की तरफ ध्यान देते है, कुछ

शिक्षा से दूर रहने का प्रयास करते है और कुछ अपनी शिक्षा को लेकर असमंजस की स्थिति में रहते है।

आज जीवन के हर क्षेत्र में विज्ञान ने अपना प्रभाव डालकर जीवन यंत्रवत बना दिया है, ऐसे में विद्यार्थी में चिन्तन शक्ति के विकास के लिए अध्ययन आदतों का होना आावश्यक है। किशोर बालक में यदि आत्म विश्वास है तो वह शिक्षा जगत के हर क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करते हुए अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता रहेगा। बालक विभिन्न विषयों का अध्ययन करता है लेकिन यदि उसके अंदर किसी विषय के प्रति ऐसी भावना आ जाती है कि वह उस विषय को समझ नहीं सकता तो उस विषय में बालक की रूचि कम हो जाती है जिसका प्रभाव बालक की अध्ययन आदतों पर पड़ता है। अतः बालकों की अध्ययन संबंधी आदतों का उसकी भावी सफलता से घनिष्ठ संबंध होता है।

शोध उद्देश्य

1. उच्च सांवेगिक समायोजन एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाले किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।
2. उच्च सांवेगिक समायोजन एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाले किशोर छात्रों की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।
3. उच्च सांवेगिक समायोजन एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाली किशोर छात्राओं की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

1. उच्च सांवेगिक समायोजन एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाले किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. उच्च सांवेगिक समायोजन एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाले किशोर छात्रों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं होता है।
3. उच्च सांवेगिक समायोजन एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाली किशोर छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं होता है।

शोध विधि

शोध की प्रकृति के आधार पर शोधार्थी द्वारा शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

किसी जनसंख्या या समष्टि में उसके प्रतिनिधि स्वरूप एवं अंश चुन लेने को प्रतिचयन करते है। शोध के लिए किशोर विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है जिसमें कुल 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया है –

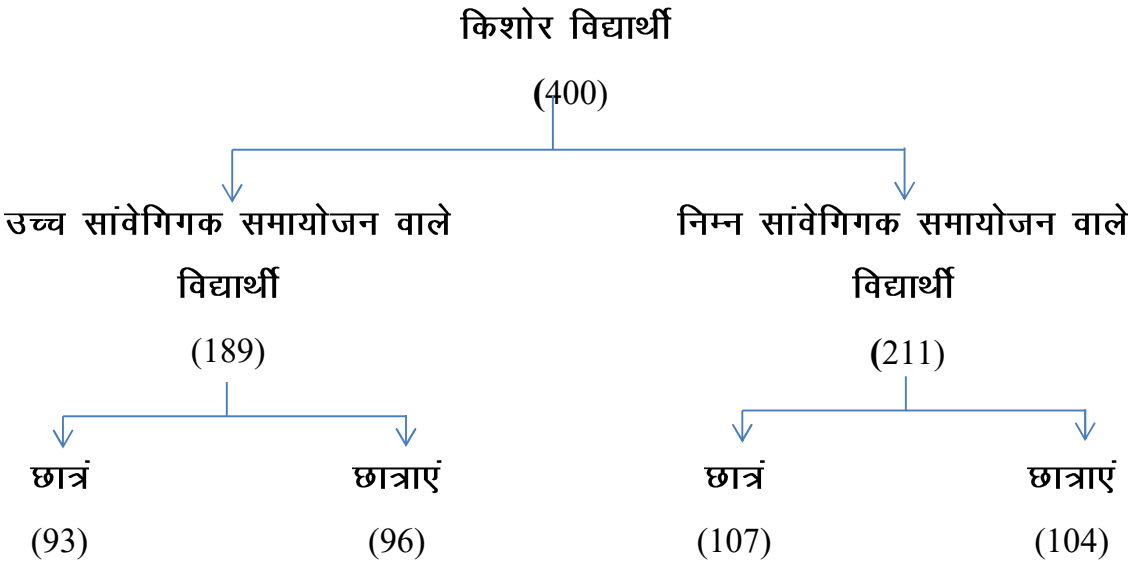

शोध उपकरण

उपकरण की विशेषताओं एवं शोध कार्य की आवश्यकता के अनुक्रम शोधार्थी ने "Study habit Inventary" डॉ. बी.वी. पटेल द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण एवं डॉ. आर. सी. देवा द्वारा निर्मित सामाजिक समायोजन प्रामापनी का प्रयोग किया है।

सांख्यिकीय प्रविधि

सांख्यिकीय प्रविधि रूप में मध्यमान (M), मानक विचलन (SD) तथा टी परीक्षण (t)का प्रयोग किया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी ने प्रदत्तों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या निम्नलिखित प्रकार से किया है

सारणी संख्या – 1

उच्च सांवेगिक समायोजन एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाले किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी मूल्य

चर	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी. मूल्य	सार्थकता स्तर
उच्च सांवेगिक समायोजन वाले किशोर विद्यार्थी	189	73.59	4.5	2.27	.05
निम्न सांवेगिक समायोजन वाले किशोर विद्यार्थी	211	72.42	5.8		

स्वतंत्रता के अंश (df) पर = 398

.05 स्तर पर सारणी मान 1.64

उपयुक्त सारणी संख्या 1 से ज्ञात होता है कि उच्च सांवेगिक समायोजन एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाले किशोर विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 73.59 एवं 72.42 तथा प्रमाप विचलन 4.5 एवं 5.8 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 398 पर दोनों चरों के क्रांतिक अनुपात 2.27 प्राप्त हुआ जो सार्थकता स्तर .05 पर सारणीमान 1.64 से अधिक है। अतः उच्च सांवेगिक समायोजन एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाले किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं है, यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

सारणी संख्या – 2

उच्च सांवेगिक समायोजन एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाले किशोर छात्रों की अध्ययन आदतों का मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी मूल्य

चर	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी. मूल्य	सार्थकता स्तर
उच्च सांवेगिक समायोजन वाले किशोर छात्र	93	73.22	3.7	3.44	.05
निम्न सांवेगिक समायोजन वाले किशोर छात्र	107	71.12	4.9		

स्वतंत्रता के अंश (df) पर = 198

.05 स्तर पर सारणी मान 1.64

उपयुक्त सारणी संख्या 2 से ज्ञात होता है कि उच्च सांवेगिक समायोजन एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाले किशोर छात्र का मध्यमान क्रमशः 72.26 एवं 71.12 प्राप्त हुआ है। इनका प्रमाप विचलन 3.7 एवं 4.9 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 198 पर दोनों चरों के क्रांतिक अनुपात 3.44 प्राप्त हुआ जो सार्थकता स्तर .05 पर सारणीमान 1.64 से अधिक है। अतः उच्च सांवेगिक समायोजन एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाले किशोर छात्र की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं है, यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

सारणी संख्या – 3

उच्च सांवेगिक समायोजन एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाले किशोर छात्रों की अध्ययन आदतों का मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी मूल्य

चर	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी. मूल्य	सार्थकता स्तर
उच्च सांवेगिक समायोजन वाले किशोर छात्राओं	96	73.96	5.3	.282	.05
निम्न सांवेगिक समायोजन वाली किशोर छात्राओं	104	73.72	6.7		

स्वतंत्रता के अंश (df) पर = 198

.05 स्तर पर सारणी मान 1.64

उपयुक्त सारणी संख्या 3 से ज्ञात होता है कि उच्च सांवेगिक समायोजन एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाली किशोर छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 73.96 एवं 73.72 प्राप्त हुआ है। इनका प्रमाप विचलन 5.3 एवं 6.7 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 198 पर दोनों चरों के क्रांतिक अनुपात .282 प्राप्त हुआ जो सार्थकता स्तर .05 पर सारणीमान 1.64 से कम है। अतः उच्च सांवेगिक समायोजन एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाली किशोर छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं है, यह शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

शोध निष्कर्ष

1. उच्च सांवेगिक समायोजन एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाले किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर होता है।
2. उच्च सांवेगिक समायोजन एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाले किशोर छात्रों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर होता है।
3. उच्च सांवेगिक समायोजन एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाली किशोर छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं होता है।

शैक्षिक निहितार्थ

1. किशोर विद्यार्थी अपने अध्ययन से संबंधित आदतों का ज्ञान प्राप्त कर अध्ययन आदतों में सुधार कर सकते है।
2. किशोर विद्यार्थियों के माता–पिता अपने बच्चों की अध्ययन आदतों को जानकर उनके समायोजन में सहायता कर सकते है।
3. शिक्षक विद्यार्थियों के सांवेगिक समायोजन के अनुसार उनकी अध्यन आदतों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है।

संदर्भ (Reference)

- Best, J.W. Research in Education, New Delhi Prentice Hall of India Pvt. Ltd. 1977
- बेस्ट, जॉन डब्ल्यू 1995, ''शिक्षा अनुसंधान विधि एवं विश्लेषण,'' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- सारस्वत, ज्याोति एवं जोशी, डॉ. सपना ''उच्च एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाले किशोर विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि का अध्ययन'' , Vol.3/Issue 40/March-2018/ISSN. 2394-2808
- जोशी, डॉ. सपना एवं अग्रवाल, नुपुर ''उच्च एवं निम्न सांवेगिक समायोजन वाली शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति अभिवृति का अध्ययन''Vol.1/Issue 58/Sept.-2016/ISSN. 2304-2908
- https://ijrrssonline.in › HTML_Papers
- https://www.inspirajournals.com